श्रीमद्भगवद्गीता और भगवान

ब्र.कु.जगदीश...

'भगवान और गीता' - यह जो विषय है, यह बहुत ही उत्तम है क्योंकि 'भगवान' शब्द आत्माओं में से उत्तम जो परमात्मा है, उनका वाचक है और गीता सभी शास्त्रों में उत्तम है। फिर इन दोनों से मनुष्य का जीवन भी उत्तम बनता है और उससे प्राप्ति भी उत्तम होती है। परन्तु आज, जैसे परमात्मा के विषय में अनेक मत हैं, वैसे ही गीता पर भी अनेक टीकाएं और टिप्पणियां हैं। अत: गीता के बारे में स्पष्ट, यथार्थ और निश्चयात्मक रीति से जानने की आवश्यकता है।

गीता में किसके महावाक्य हैं? - वास्तव में गीता की उत्तमता ही इसका कारण है कि यह स्वयं भगवान के महावाक्यों का संकलन है। तभी तो इसका नाम भी 'भगवद्गीता' है। अन्य किसी भी शास्त्र का ऐसा नाम नहीं है। परन्तु इसका नाम 'भगवद्गीता' मानते हुए भी बहुत से लोग देवकी-पुत्र श्रीकृष्ण को इसका आदि वक्ता मानते हैं। अत: संसार के करोड़ों लोग, जो कि श्रीकृष्ण को भगवान नहीं मानते, वे इसे भी भगवान के महावाक्यों का ग्रन्थ नहीं मानते, बल्कि इसे एक महात्मा के वचनों का संग्रह मानते हैं। इससे गीता का माहात्म्य बहुत कम हो गया। अत: इस बात को आज स्पष्ट करने की जरूरत है कि भगवद्गीता में जो 'भगवान' शब्द है, वह किसका वाचक है अर्थात् गीता के भगवान का स्वरूप क्या है। भगवान के स्वरूप को यथार्थ रीति से जाने बिना गीता का ठीक अर्थ नहीं समझा जा सकता और भगवान की जो आज्ञा है कि 'तुम मुझे याद करो, मुझमें मन लगाओ (मन्मनाभव)' आदि-आदि, मनुष्य उसका पालन भी नहीं कर सकता और उसका पालन किये बिना वह योगयुक्त और जीवनमुक्त भी नहीं हो सकता।

भगवान की स्वरूप की सही पहचान के लिए गीता का पहला निर्देश - आज गीता-ज्ञान का दाता देवकी - नंदन, मोर-मुकुट-धारी श्रीकृष्ण को माना जाता है। गीता में एक ऐसा चित्र भी प्राय: लगा रहता है। इस प्रकार गीता के प्रसंग में 'भगवान' शब्द का उच्चारण होते ही गीता-प्रेमियों के मन में इस दैहिक चित्र की याद ही आती है। परन्तु भगवान ने स्वयं बतलाया है कि देह अलग है, देही अलग है। गीता में देह को 'क्षेत्र' और आत्मा को 'क्षेत्रज्ञ' कहा गया है और दोनों का भली-भांति भेद स्पष्ट किया गया है। अत: शारीरिक रूप, जो कि लोगों के मन में याद हो आता है को 'भगवान' नहीं कहेंगे बल्कि जिस चेतन सत्ता ने शरीर का आधार लिया उसे 'भगवान' कहेंगे। गीता में भगवान के स्पष्ट महावाक्य है कि ''मैं अपनी प्रकृति को अधीन करके प्रगट होता हूँ (प्रकृति स्वाम् अधिष्ठाय संभवामि...)। अत: शरीर को 'भगवान' समझना गलत है, बल्कि शरीर रूप प्रकृति को जो अधीन करने वाली सत्ता है, वही भगवान है। गीता में अन्य स्थलों पर भी लिखा है कि प्रकृति अलग है, पुरुष अलग है और भगवान तो पुरुषोत्तम है। इसलिए गीता में कहा है कि - मैं अव्यक्त हूँ, व्यक्त शरीर में आता हूँ परंतु बुद्धिहीन लोग मुझे व्यक्त (दैहिक रूप वाला) मान लेते हैं (अव्यक्तम् व्यक्तिमापन्न मन्यते माम् अबुद्धय:)। शरीर से भिन्न अव्यक्त एवं दिव्य होने के कारण ही तो भगवान ने कहा कि - 'मैं तुझे दिव्य चक्षु देता हूँ, तू उस द्वारा मुझ परमात्मा का वह वास्तविक रूप देख। अत: गीता का पहला निर्देश यह है कि भगवान को व्यक्त या दैहिक रूप वाला मानना बुद्धिहीनता है।

भगवान का दिव्य रूप कौनसा है? - अब प्रश्न उठता है कि यदि मोर-मुकुटधारी शारीरिक रूप, भगवान का नहीं है तो उनका निज दिव्य रूप कौनसा है? इस बात को समझने के लिए पहले 'आत्मा' अथवा 'पुरुष' को जानना जरूरी है। आत्मा के बारे में भगवान ने कहा है कि जैसे इस लोक को एक सूर्य प्रकाशित करता है, वैसे ही इस क्षेत्र अथवा शरीर को आत्मा प्रकाशित करती है, (यथा प्रकाशयति एक: कृत्स्नं लोकम् इमं रवि, क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत)। अत: स्पष्ट है कि आत्मा एक ज्योतिस्वरूप, चेतन सत्ता है जो कि शरीर में सर्वव्यापक नहीं है, बल्कि जैसे इस लोक में सूर्य एक स्थान पर होते हुए लोक को प्रकाशित करता है, वैसे ही आत्मा भी शरीर में एक स्थान पर है। यह आत्मा ज्योति-बिन्दु रूप है और भृकुटि में ही इसका वास है जहां पर लोग प्राय: बिन्दी अथवा तिलक लगाया करते हैं। इसीलिए ही गीता में भी भगवान ने कहा है कि - शरीर छोड़ते समय भृकुटि के बीच जो आत्मा है, उसमें ठीक रीति से स्थित होने वाला ही परम पुरुष परमात्मा के पास जाता है (प्रयाणकाले भ्रुर्वोमध्ये प्राणम् आवेश्य सम्यक सतं परं पुरुषमुपयति दिव्यं..। तो जैसे आत्मा अथवा पुरुष ज्योति-बिन्दु रूप अथवा ज्योति का एक अणु:मात्र है, वैसे ही परमात्मा भी ज्योतिबिन्दु रूप ही है। वह केवल धर्म-गलानि के समय शरीर लेता है। इसीलिए गीता में भगवान ने कहा है कि 'मैं सभी देहधारियों में श्रेष्ठ हूँ (अधियज्ञोहम् एवं अत्र देहे, देहमृताम् वर)।

'कृष्ण' नाम किसका है? - यह तो स्पष्ट हो गया कि भगवान देह से अलग हैं, वह ज्योतिबिन्दु स्वरूप हैं जो कि धर्म ग्लानि के समय देह लेते हैं, परन्तु अब प्रश्न उठता है कि गीता में जो कृष्ण नाम है, वह किसका है? पहले तो यह सोचने की बात है कि क्या 'कृष्ण' नाम संज्ञा-वाचक है या गुणवाचक? यदि वह संज्ञा-वाचक है तो यह भगवान का नाम हो नहीं सकता क्योंकि भगवान के सभी नाम गुण-वाचक अथवा परिचय वाचक होते हैं। यदि यह नाम गुण-वाचक है और यदि 'कृष्ण' शब्द का अर्थ सांवला है तो भी इस अर्थ में यह भगवान का नाम नहीं हो सकता क्योंकि ज्योति स्वरूप भगवान को तो 'सांवला' कहा ही नहीं जा सकता। भगवान के लिए तो गीता में कहा गया है कि 'आदित्य वरणं तमस: परस्तात...' अर्थात् वह तो सूर्य (आदित्य) के समान तेजोमय रूप वाले हैं और अंधकार अथवा श्यामता से सदैव परे हैं। फिर भगवान ने यह भी कहा है कि दिव्य चक्षु द्वारा मेरे दिव्य रूप (प्रकाशमय रूप) को देखो।

गीता में, 'कृष्ण' के अतिरिक्त भगवान के अन्य नाम भी दिए हैं, जैसे कि जनार्दन, अच्युत, गोविंद, हृषिकेश, केशव आदि-आदि। ये सभी गुण-वाचक अथवा परिचय-वाचक नाम हैं। 'कृष्ण' शब्द के छ: अर्थ हैं -

1. जो भक्तों के मन को खींच कर अपने समान आनंद स्वरूप कर डालता है।

2. यह 'कृष' धातु सत्ता का वाचक है और 'ण' प्रत्यय 'आनंद' का वाचक है। 'सत्ता' और 'आनंद' दोनों का एकता-भाव रूप परमात्मा ही कृष्ण है। अर्थात् सत् चित्त, आनंद स्वरूप होने के कारण परमात्मा ही का एक नाम 'कृष्ण' है।

3. जो विनाश काल में सब आत्माओं को अपनी ओर खींचता है उसका नाम 'कृष्ण' है।

4. भक्तों के पापादि दोषों को निवारण करने के कारण वह 'कृष्ण' कहलाता है।

5. जो शत्रुओं को भी अपनी शक्ति के महान् बल से अपनी ओर खींचकर अपने वश में करता है, वह 'कृष्ण' है।

6. न प्राप्त हो सकने वाले पुरुषार्थी को भी जो भक्तजनों को प्राप्त कराता है, वह 'कृष्ण' है।

'कृष्ण' शब्द के जो अर्थ दिये गए हैं, इन अर्थों को प्राय: सभी विज्ञ लोग मानते हैं। परन्तु सर्व साधारण इन अर्थों को नहीं जानते। इन अर्थों पर विचार करने से स्पष्ट है कि 'कृष्ण' नाम देवकी-पुत्र के संज्ञा-वाचक नाम के तौर पर प्रयोग नहीं हुआ बल्कि स्वयं ज्योतिस्वरूप, अशरीरी सत् चित आनन्द स्वरूप परमपिता के लिए प्रयोग हुआ है। यदि यह संज्ञा-वाचक नाम के तौर पर प्रयोग हुआ होता तो गीता में 'कृष्ण' के अतिरक्त अन्य कोई नाम न होता। परन्तु हम देखते हैं कि जैसे 'कृष्ण' नाम कई बार आया है, वैसे ही जनार्दन, हृषीकेश, केशव आदि नाम भी अनेक बार आये हैं। वे सभी नाम भी गुण-वाचक हैं।

अत: मालूम रहे कि जैसे 'राम' दो हैं - एक दशरथ-सुत राम और एक परमात्मा जो कि रञ्जनकारी होने के कारण अथवा रमणीक होने के कारण इस गुण-वाचक नाम से भी जाने जाते हैं, वैसे ही कृष्ण भी दो हैं। 'दशरथ-सुत' राम की तरह कृष्ण शब्द यदि संज्ञा-वाचक शब्द के तौर पर प्रयोग किया जाये तो यह 'देवकी-नंदन' कृष्ण के लिए प्रयुक्त हुआ जानना चाहिए। परन्तु यदि अन्य गुण-वाचक नामों में से एक गुण-वाचक नाम के तौर पर प्रयुक्त हुआ है तो इसे सत्, चित्त, आनन्द स्वरूप, निराकार (अकाय) परमात्मा का वाचक मानना चाहिए। अब जैसे राम के भी ईश्वर 'अशरीरी राम' हैं जिन्हें कि 'रामेश्वर' कहा जाता है, वैसे ही कृष्ण के भी जो ईश्वर हैं उन्हें गोपेश्वर कहा जाता है। दक्षिण भारत में रामेश्वर नाम शिवलिंग की प्रतिमा है और वृंदावन में गोपेश्वर नाम से भी प्रतिमा स्थापित है। उसी निराकार परमात्मा रामेश्वर अथवा गोपेश्वर ही का मुख्य, स्व-कथित नाम 'शिव' है क्योंकि वह जगत का कल्याण करता है, वह सबको मुक्ति देता है। उसे ही 'केशव' कहा गया है क्योंकि वह ब्रह्मा, विष्णु, और शंकर का भी रचयिता है। यही कारण है कि उसे 'त्रिमूर्ति शिव' भी कहते हैं।

इस मान्यता से गीता एक सार्वभौम शास्त्र - स्पष्ट है कि यदि स्वयं भारतवासियों को यह ज्ञान होता कि गीता-ज्ञान ज्योतिस्वरूप, निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने दिया था जो कि ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता हैं और त्रिकालदर्शी हैं तो विश्व के सभी लोग इसे परम आदरणीय परमपिता के महावाक्य जानकर इसे शिरोधार्य मानते और वे भारत को भी परमपिता की अवतार-भूमि मानकर अपना सर्वोत्तम तीर्थ मानते। उस अवस्था में विश्व का सारा इतिहास ही बदल जाता। मुसलमान लोग जो कि देश-देशांतर से अपने परम तीर्थ मक्का में जाकर जाने-अनजाने अपने धर्म-विधान के तौर पर वहां संगे असवद को अति प्यार से चूमते हैं, वे भारत पर आक्रमण न करते क्योंकि वास्तव में यह संगे असवद शिव-प्रतिमा ही तो है - वही शिव जिन्होंने भारत में अवतरित होकर गीत-ज्ञान की मधुर बांसुरी बजाई और भारत को पुण्यभूमि बनाया। यहूदी लोग भी गीता में श्रद्धा रखते क्योंकि उनके धर्मपिता मूसा को जो साक्षात्कार हुआ था, वह इस शिव-रूप ही का तो था जिसे वो अपनी स्थानीय भाषा में जेहोवा कहते हैं। शिव को, अर्थात् निराकार, ज्योतिस्वरूप परमात्मा को तो सभी धर्मों तथा देशों के लोग पूर्व काल में अपना 'परमपिता' अथवा 'मालिक' मानते ही रहे हैं। देखिये तो 'कृष्ण' को देवकीनंदन का नाम मानकर और इसे एक संज्ञा-वाचक शब्द समझकर गीता को श्रीकृष्ण के वचनों का ग्रंथ मान लिया गया और इस प्रकार इसका माहात्म्य बहुत ही कम कर दिया गया!

अर्जुन किसका नाम था और 'रथ' शब्द किसका वाचक है? - 'रथ' और घोड़ों का जैसा उल्लेख महाभारत में किया गया है, वैसा रथ और वैसे घोड़े तो हो ही नहीं सकते। महाभारत में तो लिखा है कि खाण्डव वन के दाह के समय अग्नि देवता ने अर्जुन को यह रथ दिया जो कि नदियों, पहाड़ों आदि पर भी चल सकता था और आकाश में भी उड़ जा सकता था। उसमें बताया गया है कि इसके घोड़े चित्ररथ गांधर्व के सौ घोड़ों में से थे जो कि स्वर्ग में तथा पाताल में भी उड़कर जा सकते थे और ये मरते नहीं थे। इनमें से जितने घोड़े मर जाते थे, उतने ही पैदा हो जाते थे। अब आप सोचिए कि क्या ऐसा रथ और ऐसे घोड़े भला हो सकते हैं?

तो सत्यता कुछ और है। वास्तव में रथ शब्द अलंकारिक है, यह शरीर ही का वाचक है। जैसे गीता में शरीर को आत्मा के 'वस्त्र' कहा गया है, वैसे ही यहां शरीर की उपमा 'रथ' से की गई है। उपनिषदों में भी है कि शरीर को रथ मनो और बुद्धि को सारथि। परमपिता शिव गीता-ज्ञान देने के लिए वास्तव में एक साधारण मनुष्य के तन में प्रविष्ट, आविष्ट अथवा संनिविष्ट हुए थे। उस शरीर रूपी रथ में एक तो उस मनुष्य की 'आत्मा' अर्थात् 'रथी' भी है, अब चूंकि परमपिता परमात्मा ने भी परकाया में प्रवेश किया, इसलिए उन्हें 'सारथी' कहा गया है। शरीर को रथ की उपमा इसलिए दी गई है कि युद्ध का प्रसंग चल रहा है, सारी गीता युद्ध के प्रसंग में कही जा रही है और युद्ध में रथ का प्रयोग होता है या यों कहिए कि मन रूपी घोड़े को बुद्धि द्वारा वश में रखना है अथवा उसकी लगामें भगवान के हाथ में देनी हैं, इसलिए शरीर की उपमा रथ से की गई है। उसी दृष्टिकोण से भगवान को 'सारथी' कहा गया है।

-शेष पृष्ठ 11 पर

अध्यात्म साधना में ज्ञान की गुह्यता व उनके अनुभवों, दृष्टांतों और व्याख्यानों से स्पष्ट होता है जो तपस्वी, साधक व योगी हैं, इसे अपनी साधना द्वारा प्राप्त करते हैं। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी ऊषा शिव परमात्मा द्वारा बताये गए गीता ज्ञान की सुयोग्य व्याख्याकार एवं विवेचक हैं। वे इसे सतत् श्रृंखला के रूप में 'ओम शांति मीडिया' में प्रस्तुत करती आ रही हैं। उनकी यह प्रस्तुति इतनी सरल, सुबोध तथा हृदयग्राही होती है कि पाठक इसके अंक की प्रतीक्षा करते हैं। उनके लिए तो यह सतत् अध्ययन का भी हिस्सा बनी रही। आप सभी भाई-बहनों की लम्बे समय से यह मांग थी कि गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य की पूरी श्रृंखला को एक साथ संकलित रूप में प्रस्तुत किया जाये। जिससे इसका लाभ अनेक आत्माओं को मिल सके। आप सभी भाई-बहनों के स्नेह भरे आग्रह का ही यह परिणाम है कि इसे संकलित रूप में प्रस्तुत किया गया है। शिव परमात्मा द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से बताया गया यह गीता ज्ञान, रूद्र ज्ञान यज्ञ का आधार है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें - ओम शांति मीडिया, ऑफिस, शांतिवन।

गीता ज्ञान का
आध्यात्मिक रहस्य
mediabkm@gmail.com, m-8107119445